

हिंदी ऑनलाइन कक्षा में आप सभी का स्वागत है।  
कक्षा -8  
हिन्दी  
पाठ - 4  
प्रियतम

**CHANGING YOUR TOMORROW**

लेकर चले नारद जी

आज्ञा पर धृत-लक्ष

एक बूँद तेल उस पात्र से गिरे नहीं।

योगिराज जल्द ही

विश्व-पर्यटन करके

लौटे बैकुंठ को

तेल एक बूँद भी उस पात्र से गिरा नहीं,

उल्लास मन में भरा था

यह सोचकर तेल का रहस्य एक

अवगत होगा नया।



नारद को देखकर विष्णु भगवान ने  
बैठाया स्नेह से

कहा, "यह उत्तर तुम्हारा यहीं आ गया।  
बतलाओ, पात्र लेकर जाते समय कितनी बार  
नाम इष्ट का लिया?"

"एक बार भी नहीं।"

शक्ति हृदय से कहा नारद ने विष्णु से—

"काम तुम्हारा ही था  
ध्यान उसी से लगा रहा  
नाम फिर क्या लेता और?"

विष्णु ने कहा, "नारद  
उस किसान का भी काम  
मेरा दिया हुआ है

उत्तरदायित्व कई लादे हैं एक साथ,  
सबको निभाता और

काम करता हुआ  
नाम भी वह लेता है  
इसी से है प्रियतम।"

नारद लज्जित हुए  
कहा, "यह सत्य है।"



—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

## शब्दार्थ-

स्नेह - प्रेम भाव

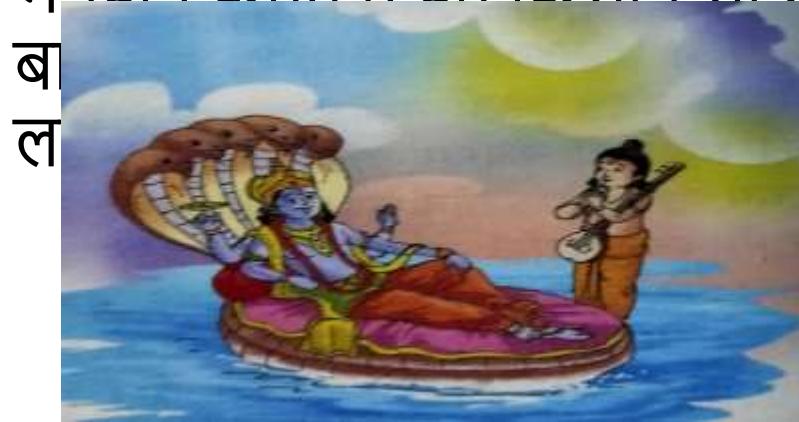
शंकित - शंकायुक्त , भीतर

इष्ट - चाहा हुआ, पूजित, प्रिय

उत्तरदायित्व- जिम्मेदारी

## अर्थबोध-

बिष्णु जी से आज्ञा पाकर नारद जी अपने कार्य पर चल पड़े। कुछ समय बाद नारद जी अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर खुशी से लौटते हैं। नारद जी के मन में उल्लास था कि इसके बाद भगवान उन्हें रहस्य बताएंगे। बिष्णु जी नारद जी से पुछते हैं कि तेल लेकर जाते समय कितने बार अपने ईष्ट का नाम लिए थे? नारद जी कहते हैं मैं तो आपका दिया हुआ काम करता था तो कैसे आपका नाम लेता। यह बात सुनकर भगवान कहते हैं वह किसान भी मेरा दिया हुआ काम करता है और उस बिच तीन बार मैंने कहा है वह मेरा प्रिय है। यह बात सुनकर नारदजी



## संबंधित प्रश्न-

१. नारद विश्व पर्यटन करने के बाद खुश क्यों थे?
२. बिष्णु जी नारद जी से क्या पुछा?
३. नारद जी बिष्णु जी के प्रश्न का उत्तर क्या दिए?
४. अंत में बिष्णु जी नारद को क्या कहकर समझाया?
५. निम्नलिखित शब्दों से वाक्यों बनाओ ।  
प्रियतम , उत्तरदायित्व, इष्ट, स्नेह ।

**THANKING YOU**  
**ODM EDUCATIONAL GROUP**